Subject Matter and Branches of Logic

Subject Matter of Logic (तर्कशास्त्र का विषय वस्तु)

तर्कशास्त्र वह शास्त्र है जो सही ढंग से सोचने और तर्क करने के नियमों का अध्ययन करता है। इसका उद्देश्य यह जाँचना है कि कोई निष्कर्ष दिए गए कथनों से तार्किक रूप से निकलता है या नहीं। तर्कशास्त्र कथन के सच या झूठ होने पर नहीं, बल्कि तर्क की सही प्रक्रिया पर ध्यान देता है।

i) विचार (Thought) : विचार का अर्थ है मन में उत्पन्न होने वाली संकल्पना या सोच। तर्कशास्त्र में विचार सबसे पहला चरण होता है, क्योंकि बिना विचार के न तो कथन बन सकता है और न ही तर्क। उदाहरण के लिए एक विचार है।

ii) अवधारणा (Concept) : किसी वस्तु, व्यक्ति या गुण की सामान्य समझ अवधारणा होती है। यह विचार का व्यवस्थित रूप है। जैसे, 'विद्यार्थी' एक अवधारणा है, जिसमें पढ़ने वाले सभी व्यक्ति शामिल होते हैं।

iii) निर्णय / प्रस्ताव (Judgement / Proposition) : जब किसी अवधारणा के बारे में हम कुछ स्वीकार या अस्वीकार करते हैं, तो वह निर्णय कहलाता है। इसे भाषा में व्यक्त करने पर वह प्रस्ताव बन जाता है। उदाहरण के लिए, 'सभी मनुष्य नश्वर हैं' एक प्रस्ताव है, जो सत्य या असत्य हो सकता है।

iv) तर्क (Argument): तर्क वह प्रक्रिया है जिसमें एक या अधिक प्रस्तावों के आधार पर एक निष्कर्ष निकाला जाता है, तर्क में कारण और परिणाम का संबंध होता है। उदाहरण: सभी मनुष्य नश्वर हैं; राम मनुष्य है; इसलिए राम नश्वर है।

(2) अनुमान / निष्कर्ष (Inference / Conclusion) : अनुमान वह अंतिम कथन है जो तर्क के माध्यम से प्राप्त होता है। तर्कशास्त्र यह जाँचता है कि निष्कर्ष सही नियमों के अनुसार निकाला गया है या नहीं।